कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष-2023

बाजरा की उन्नत खेती

जिला कृषि पदाधिकारी सह–परियोजना निदेशक आत्मा, राँची

कृषि भवन परिसर, कांके रोड, राँची, झारखण्ड

बाजरा की उन्नत खेती

भरत दुनिया का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है। देश के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य है तथा साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती हैं। अधिक ऊर्जा होने के कारण बाजरे को सर्दियों के मौसम में खाने में अधिक प्रयोग किया जाता है। बाजरा के चार में प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस तााि खनिज लवण उपयुक्त मात्रा में तथा हाइड्रोरासायनिक अम्ल सुरक्षित मात्रा में पाया जाता है। कुछ रोगों व कीट का प्रकोप व वैज्ञानिक तरीके से फसल प्रबंधन नहीं होने से भी इस फसल की पैदावार अन्य खरीफ की अनाज वाली फसलों की तुलना में कम हो जाती है। परन्तु यदि सही किस्म का चुनाव और खेती के लिए उन्नत सस्य एवं पौध संरक्षण तकनीकियां अपनाई जाएं तो बाजरा की पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

बाजरे का स्वास्थ्यवर्द्धक लाभ

- कोलस्ट्रॉल लेवल को कन्ट्रोल करता है।
- पचन क्रिया को ठिक रखता है।
- कैंसर को रोकने में मदद करता है।
- वनज कम करने में मदद करता है।
- एनीमिया रोग को ठिक करता है।
- ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखता है।
- मधुमेह को ठिक रखता है।
- अस्थमा दूर करता है।
- शरीर को अधिक उर्जा (एनर्जी) देता है।
- खाद्य रेशा की प्रचुरता ।

बाजरे में पोषक तत्व की मात्रा (100 ग्राम)

कैलोरी	361	कैल्सियम	8 मिली ग्राम
प्रोटीन	12 ग्राम	फॉल्फोरस	242 मिली ग्राम
वसा	5.4 ग्राम	सेलेनियम	2.7 मिली ग्राम
रेशा	11.5 ग्राम	कॉपर	0.8 मिली ग्राम
पोटाशियम	195 मिली ग्राम	मैंगनिज	1.6 मिली ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	72 ग्राम	सोडियम	5 मिली ग्राम
लेहा	6 मिली ग्राम	टोमेगा 3 फैटो एसिड	118 मिली ग्राम
मैंगनेशियमः	114 मिली ग्राम	जिंक	1.7 मिली ग्राम

भूमि का चुनाव : इसके लिए हल्की या बलुई दोमट मिट्टी उचित होती है। बाजरा की खेती के लिए उचित जल निकास वाली टांड़ या मध्यम जमीन उपयुक्त होता है। यहॉ के किसान नीचे के जमीन में धान की खेती करते है, लेकिन ऊपर का टाड़ जमीन पानी के अभाव में खाली रह जाता है। अतः वैसी जमीन जहॉ पानी का जमाव नहीं होता है। वहाँ बाजरा की खेती करें तो फसल अच्छी होगी क्योंकि बाजरा का पौधा जल जमाव को सहन नहीं करता है।

फसल पद्धतियां : बाजरे की फसल के साथ यदि दलहनी फसलों (जैसे- मूंग, ग्वार, अरहर, मोठ एवं लोबिया, ज्वार या मक्का (चारे के लिए)) को अन्तः फसल के रूप में बोया जाए तो न केवल बाजरे के उत्पादन में वृद्धि होती है बल्कि दलहनों के कारण मृदा उर्वरता में सुधार होता है एवं अतिरिक्त दाल उत्नपाद से कृषकों की आय में भी वृद्धि होती है उर्वरकों से नाइट्रोजन कम दंनी पड़ती है जिससे कृषि लागत में कमी आती है। मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए फसल चक्र अपनाना महत्वपूर्ण है। बाजरे के लिए निम्न एकवर्षीय फसल चक्रों को अपनाना चाहिए।

उन्नत प्रभेद : एम.पी.-7792, एम.पी.-7878, एम.पी.-7872, कॉवेरी सुपर बॉस धनशक्ति दाना/अन्न के लिएः पूसा 443, एच.एच.वी.-216 चारा फसल के लिए :जाइन्ट बाजरा बीज दर : 10-12 किलो ग्राम/हें. चारा फसल के लिए : 20 किलो ग्राम/हे.

खेत की तैयारी : गर्मियों में गहरी जुताई करें तथा उत्तम जल निकास के लिए खेत को समतल कर लें। बाजरे की अच्छी फसल लेने के लिए एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए तथा इसके बाद दो-तीन बार जुताई करके बुवाई करनी चाहिए। दीमक व लट के प्रकोप वाले क्षेत्रों में 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से फोरेट अन्तिम जुताई से पूर्व डालनी चाहिए।

बीज दर : 10-12 किलो ग्राम/हे., चारा फसल के लिए : 20 किलो ग्राम/हे.

बीज उपचार : बीज बोने के पहले बीज को वेवीस्टीन 2 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित कर बुआई करने से फफूंदज. नित रोगो से बचाव किया जा सकता है।

बुवाई : बारानी क्षेत्रों में मानसून की पहली बारिश के साथ ही बाजरे की बुवाई कर देनी चाहिए। उत्तरी भा. रत में बाजरें की बुवाई के लिए जुलाई का प्रथम पखवाड़ा सर्वोत्तम है। बा. जरे की फसल 45 से 50 से.मी. की दूरी पर कतारों में बोनी चाहिए। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 15 सें. मी. रखनी चाहिए जिससे प्रति हैक्टर क्षेत्र में 1.75 से 2 लाख पौधे प्राप्त हो सकें। इस संख्या में पौधे उगाने से बाजरे की अधिकतम उपज ली जा सकती है। चारा फसल के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सें.मी. होनी चाहिये।

जल प्रबंधन : यद्यपि बाजरा की फसल मुख्यतः बारानी क्षेत्रों में ली जाती है परन्तु फूल आते समय व दाना बनते समय नमी की कमी होना अधिक हानिप्रद है। अतः यदि सिंचाई का स्रोत उपलब्ध हो तो इन क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई करना लाभप्रद होता है। बाजरा जल भराव से भी प्रभावित होता है अतः जल निकास का समुचित प्रबंध करें।

खरपतवार प्रबंधन बाजरे की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए 1 कि.ग्रा. एट्राजीन या पेंडिमिथालिन 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। यह छिड़ेाव बुवाई के बाद तथा अंकुरण से पूर्व करते हैं। इसके साथ-साथ बाजरे की बुवाई के 20 से 30 दिन बाद एक बार खुरपी या कसौला से खरपतवार निकाल देने चाहिए।

परिपवक्ता : बाजरा का पौधा 70 से 80 दिनों में तैयार हो जाती है। अगर चारा के लिए उगाया जाता है तब इसके पौधों की कटाई 55-60 दिनों के अन्तराल पर या 50 प्रतिशत कुल आने पर करनी चाहिए।

उत्पादन : बाजरा का उत्पादन 30 से 35 क्विन्टल/ हे. होता है और अगर हरे चारा के लिए करते है तब इसका उत्पादन 600 से 800 क्विन्टल/हे. होता है।

बाजरा का उपयोग : बिस्किट बनाने में, रोटी बनाने में, बाजरा का खीर बनाने में, बाजरा का लडडू बनाने में, हलवा एवं दलिया बनाने में

भंडारण : बाजरा के दानों को अच्छी तरक धूप में सुखाएं तथा दानों में नमी की मात्रा 8-100 प्रतिशत होने पर उपयुक्त स्थान पर भंडारण करें।

रोग और कीट नियंत्रण :

डाउनी मिल्डयू : बजरे में डाउनी मिल्डयू रोग एक फफूंद जनित रोग है जिसे रोकथाम के लिए रोडोमिल Mz 1.5 ग्राम/लिटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

स्मट : ठस रोग के होने पर हेक्साक्लोनाजोल 1 ग्राम/लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

अर्गट : इस रोग से बचाव के लिए साफ (saaf) 2 ग्राम/ लिटर दवा का छिड़काव करना चाहिए।

शुट फलाई : शूट फलाई बाजरा को नुकसान करने वाला सामान्य कीट है जिसे Dichlorovos 1 ml/lit. के दर से छिड़काव करने से किट नियंत्रित रहता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

जिला कृषि पदाधिकारी सह–परियोजना निदेशक आत्मा, राँची

कृषि भवन परिसर, कांके रोड, राँची, झारखण्ड